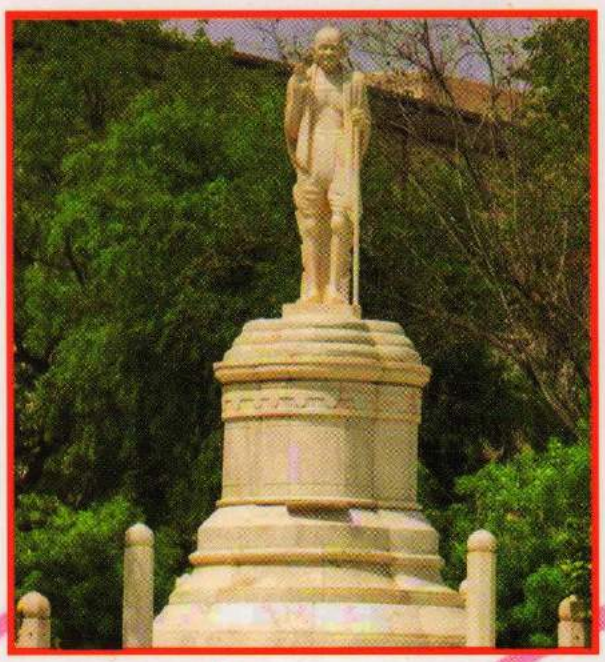

राम, रहीम, बुद्ध, जिन, ज्ञानी, सबहुँ की यह सीख सुहानी,
रूप-अरूप, अनामी-नामी, जो जसु जानी, सो तसु मानी।

साप्ताहिक प्रार्थना

प्रार्थना आर्त्त की पुकार है,
प्रार्थना हर मत का सार है,
प्रार्थना सब का अधिकार है।

स्थापित 2 अक्टूबर, 1950

प्रार्थना अशक्त की शक्ति है,
प्रार्थना सशक्त की भक्ति है,
प्रार्थना विरक्त की मुक्ति है।

प्रार्थना बल का संचार है,
प्रार्थना सुख का आधार है,
प्रार्थना प्रभु ही साकार है।

गाँधी विद्या मन्दिर

सरदारशहर, राजस्थान, 331403

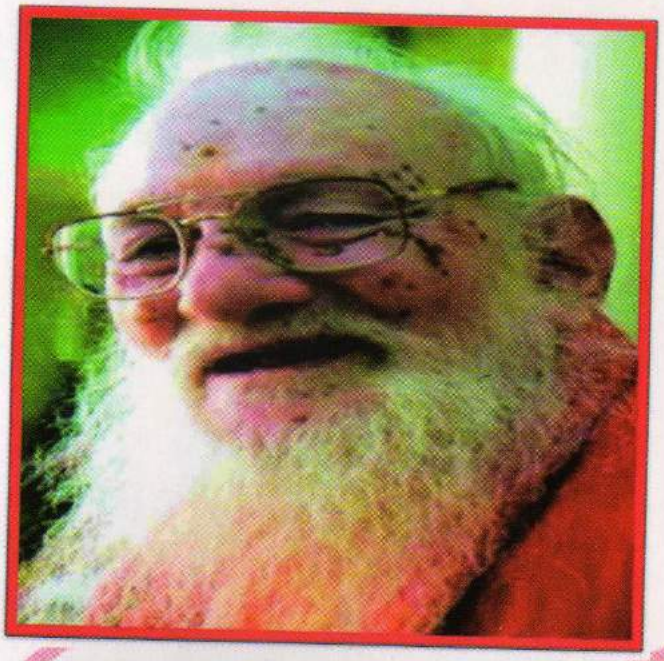

(स्वामी श्री श्रीरामशरणजी महाराज)

जन्म : 11 फरवरी 1922 (सरदारशहर, राजस्थान)
सन्यास पूर्व नाम : श्रीयुत् कन्हैयालाल दूगड़
पिता : स्वनामधन्य श्रीयुत् सुमेरमल जी दूगड़
(सुपुत्र स्व० सेठ श्री सम्पतराम दूगड़)
माता : श्रीमती इचरजदेवी (सुपुत्री स्व० सेठ
श्री जयचन्दलाला बैद, राजलदेसर)
विवाह : सन् 1937 (गंगाशहर - बीकानेर में)
पत्नी : श्रीमती इचरजदेवी
(पुत्री श्रीमती माणकदेवी-राजकरणजी चोपड़ा)
सेठ संपतरामजी दूगड़ विद्यालय की स्थापना : सन् 1948
गाँधी विद्या मंदिर की स्थापना : सन् 1950
जनहित आश्रम - मंझेवला (पुष्कर) की स्थापना : सन् 1986
सर्वस्वदान : सन् 1960 - तत्पश्चात् वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश
सन्यास ग्रहण : सन् 1985 - गुरु परमपूज्य स्वामी
श्री शरणानन्दजी सरस्वती
परिनिर्वाण : 01 अगस्त 2005

स्थापित: 2 अक्टूबर 1950

बेसिक पब्लिक स्कूल

अभियांत्रिकी संकाय

शिक्षा संकाय

साप्ताहिक प्रार्थना

"श्रीराम"

असतो मा सद्गमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर्माऽमृतंगमय

(क)

हे सर्वशक्तिमान असत्य से सत्य की ओर ले जावो।

(ख)

अंधकार से प्रकाश की ओर ले जावो।

(ग)

मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जावो।

प्रार्थना स्थल का विहंगम दृश्य

साप्ताहिक प्रार्थना

"श्रीराम"

(क)

हे प्रभु, हमें असत्य से सत्य की ओर ले जावो नाशवान और परिवर्तनशील सब असत्य है और मानव देह सहित भौतिक जगत भी परिवर्तनशील है अतः असत्य है। आत्मा और परमात्मा सत्य है अतः हमारे जगत के प्रति राग और आसक्ति का नाश हो और परमात्मा तत्व पर आस्था की ओर गमन हो।

(ख)

अज्ञान और जड़ता का द्योतक अंधकार है जहां से ज्ञान, चैतन्य और प्रगति, जो ज्योति वाचक है की ओर ले जावो।

स्थापित: 2 अक्टूबर, 1950

(ग)

मरण धर्मा भंगुर तत्व से हटाकर हमारी निष्ठा/विश्वास अक्षय, अव्यय और अमर तत्व की ओर ले जावो।

ध्वज - वन्दन

(संस्थापक महोदय द्वारा रचित)

फहरो ज्ञान पताका!

'गाँधी विद्या मन्दिर' द्वारा मेटो तम जन-मन का।
पीत-वर्ण शिक्षा, सेवा का, रक्त-वर्ण बल, श्रम का,
अर्क-वृत्त अज्ञान-हरण का, ऊँ अध्यात्म-वरण का,
राम-नाम दाता मंगल का, प्रतिपालक पल-पल का;
ध्वज-तल वरण करें दृढ़ प्रण का, मातृभूमि-रक्षण का;
शुचि, सेवा, संयम, उद्यम का, भाव जगे जन-जन का।

सद्गुरू - वन्दन

अखण्डमण्डलाकारं, व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।

ईशोपनिषद्-सूत्र

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः, मा गृधः कस्यस्विद्धनम्।।

सर्वेश वन्दन

यं ब्रह्मा वरूणेन्द्र रूद्र मरूतः, स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर
वेदैः साङ्गपद क्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा, पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणाः, देवाय तस्मै नमः।।

सद्गुरू - वन्दन का भावार्थ

पूर्ण वृत्ताकार जगत के कण कण में व्याप्त तत्व (प्रभु) के चरणों के दर्शन करवाने वाले गुरू (अज्ञान का नाश कर के ज्ञान की स्थापना करने वाले) को नमस्कार है।

ईशोपनिषद्-सूत्र भावार्थ

समस्त जड़ चेतन पदार्थों में परमात्मा का वास है। उनका (जगत का) त्याग करके (उन पर से अपना अधिकार का त्याग करके) आवश्यकतानुसार उनका (भोग नहीं) उपयोग करो। भौतिक जगत किसी का भी नहीं है।

सर्वेश वन्दन

ब्रह्मा, वरूण, इन्द्र, रूद्र, और मरूत् दिव्य-स्तोत्रों से जिनकी स्तुति करते है सामवेद का गान करने वाले मुनि, अंग, पद, क्रम, और उपनिषद् के वेद मंत्रों से जिनकी स्तुति करते है; योगीजन समाधि लगाकर, परमात्मा में लीन मन द्वारा जिनके दर्शन करते है और देवता तथा दैत्य जिनकी महिमा का पार नहीं पाते हैं, उन परमात्मा को मैं नमस्कार करता हूँ।

श्रीमद्भगवद्गीता

(अध्याय - 2)

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा, समाधिस्थस्य केशव।
स्थितधीः कि प्रभाषेत, किमासीत व्रजेत किम् ।।54।।

श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्, सर्वान्पार्थ मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः, स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ।।55।।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः, सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः, स्थितधीर्मुनिरूच्यते ।।56।।

स्थापित: 2 अक्टूबर, 1950

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि, तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।57।।

यदा संहरते चायं, कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।58।।

श्रीमद्भगवद्गीता का भावार्थ

(अध्याय - 2)

अर्जुन ने कहा (बोला)

अर्जुन ने पूछा, हे केशव ! समाधि में स्थित स्थिरबुद्धिवाले पुरूष के क्या लक्षण है? स्थिरबुद्धि पुरूष कैसे बोलता है, कैसे बैठता है, और कैसे चलता है? ।।54।।

श्रीभगवान ने कहा

उसके उपरान्त भगवान (श्री कृष्ण) बोले, जिस काल में यह पुरूष मन में स्थित सम्पूर्ण कामनाओं को त्याग देता है, और आत्मा से ही आत्मा में संतुष्ट हो जाता है वह व्यक्ति स्थिर बुद्धि वाला कहा जाता है ।।55।।

जो दुखों से विचलित (उद्विग्न) नहीं होता और सुख की कामना (आकर्षण) से रहित होता है और जो राग (जगत के आकर्षण और लगाव) से मुक्त होता है और भय या क्रोध नहीं करता, वह स्थिर बुद्धि मुनि होता है ।।56।।

जो सभी जगह स्नेह (आर्कषण) रहित हो जाता है और शुभ की प्राप्ति पर प्रशंसा नहीं करता (प्रसन्न नहीं होता) और अशुभ की प्राप्ति पर निन्दा (दुःख) नहीं करता उसका ज्ञान स्थिर हो जाता है ।।57।।

जिस प्रकार कछुआ अपने अंगो को खोल में समेट लेता है उसी प्रकार जो (व्यक्ति) अपनी इन्द्रियों को उनके विषयों से समेट (विमुख कर) लेता है उसकी बुद्धि स्थिर हो जाती है ।।58।।

विषया विनिवर्तन्ते, निराहारस्य देहिनः।
रसर्वज रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ।।59।।

यततो ह्यपि कौन्तेय, पुरूषस्य विपश्चितः।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि, हरन्ति प्रसभं मनः ।।60।।

तानि सर्वाणि संयम्य, युक्त आसीत मत्परः।
वशेहि यस्येन्द्रियाणि, तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।61।।

ध्यायतो विषयान्पुंसः, सङ्गस्तेषूपजायते ।
सङ्गात्संजायते कामः, कामात्क्रोधोऽभिजायते ।।62।।

स्थापितः 2 अक्टूबर, 1950

क्रोधाद्भवति सम्मोहः, सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो, बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ।।63।।

रागद्वेषवियक्तैस्तु, विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा, प्रसादमधिगच्छति ।।64।।

जो इन्द्रियों से उनके विषयों को ग्रहण करना छोड़ देता है उसके विषयों का लगाव छूट जाता है पर विषय भोगो में रस (आकर्षण) का भाव नहीं जाता। राग का नाश परमात्मा के स्वरूप का दर्शन (अनुभव) करने से होता है ।।59।।

हे अर्जुन, इन्द्रियाँ इतनी प्रबल और मतवाली होती है कि विवेकी मनुष्य के मन का भी बल पूर्वक हरण कर लेती है (अपनी ओर आकर्षित कर लेती है) ।।60।।

उन सभी (इन्द्रियों) को वश में करके मुझ में लगा दे। क्योंकि जिस की इन्द्रियाँ पूरी तरह वश में हो गयी है उसकी बुद्धि शान्त हो जाती है ।।61।।

विषयों का चिन्तन करने से उनमें आसक्ति हो जाती है जिससे विषयों के प्रति लगाव प्रबल हो जाता है और (कामना पूरी नहीं होने से) क्रोध उत्पन्न होता है ।।62।।

स्थापित: 2 अक्टूबर, 1950

क्रोध से मूढ़ता (अविवेक) उत्पन्न होती है जिससे बुद्धि भ्रमित हो जाती है। भ्रमित बुद्धि से बुद्धि का नाश हो जाता है और बुद्धि का नाश होने से मानव का पतन हो जाता है ।।63।।

राग द्वेष से मुक्त हुआ मानव जिसकी इन्द्रियाँ विषयों से विमुख हो गयी है वह जगत का उपयोग करते हुए भी अन्तःकरण की पवित्रता प्राप्त कर लेता है ।।64।।

प्रसादे सर्वदुःखानां, हानिरस्योपजायते।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु, बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ।।65।।

नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य, न चायुक्तस्य भावना।
न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ।।66।।

इन्द्रियाणां हि चरतां, यन्मनोऽनुविधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां, वायुर्नावमिवाम्भसि ।।67।।

तस्माद्यस्य महाबाहो, निगृहीतानि सर्वशः।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यंस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।।68।।

या निशा सर्वभूतानां, तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि, सा निशा पश्यतो मुने ।।69।।

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं, समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत्।
तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे, स शान्तिमाप्नोति न
कामकामी ।।70।।

स्थापित: 2 अक्टूबर, 1950

अन्तः करण से प्रसन्न होने वाले के सब दुखों का नाश हो जाता है और चित्त की प्रसन्नता से बुद्धि स्थिर हो जाती है।

जिसने मन नहीं जीता है उस में न तो बुद्धि हो सकती है और न ही भावना हो सकती है। भाव हीन को शान्ति नहीं मिल सकती जिसके बिना सुख कैसे मिल सकता है ।।66।।

जैसे हवा अपने वेग से नाव का हरण कर लेती है (अपनी इच्छा से कहीं ले जा सकती है।) उसी प्रकार (बिना संयम वाले की) एक इन्द्रिय भी उसके मन का हरण कर सकती है ।।67।।

इसलिये हे महावाहो (अर्जुन) इन्द्रियों को उनके विषयों से (हटाकर) पूरी तरह वश में कर लेने वाले की बुद्धि स्थिर होती है ।।68।।

जब सब जीवों के लिये रात्रि होती है (चेतना सो जाती है) तब संयमी जागृत रहता है। जब संयमी की रात होती है और उसकी कामनाएँ सो जाती है (जब संयमी अपनी इन्द्रियों को पूरी तरह शान्त कर लेता है) तब जगत जागृत रहता है ।।69।।

जिस प्रकार समुद्र में लगातार जल भरता रहता है पर फिर भी वह हमेशा पूर्ण ही रहता है (अचल रहता है) उसी प्रकार सभी कामनाओं से अप्रभावित रहने वाला शान्ति प्राप्त करता है न कि कामनाओ में रूचि लेने वाला ।।70।।

विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृह।
निर्ममो निरंहङ्कारः, स शान्तिमधिगच्छति ।।71।।
एषा ब्राह्मी स्थितिः, पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति।
स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि, ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ।।72।।

सर्वहितकारी प्रार्थना

मेरे नाथ, आप अपनी, सुधामयी, सर्वसमर्थ,
पतित-पावनी, अहैतुकी कृपा से,
दुखी प्राणियों के हृदय में, त्याग का बल,
एवम्, सुखी प्राणियों के हृदय में, सेवा का बल प्रदान करें,
जिससे वे, सुख-दुःख के, बन्धन से, मुक्त हो,
आपके पवित्र प्रेम का, आस्वादन कर, कृत्कृत्य हो जाएँ।

Sh.Milap Dugar,Ex-President of Gandhi Vidya Mandir and Founder Vice-Chancellor,IASE (Deemed) University, Sardarshahr being felicitated by awarding National Prestigious " FEROZ GANDHI SADAGI AWARD" by Sh. Bhishm Narayan Singh and First Gentleman Sh.Devi Singh Shekhawat

गाँधी विद्या मंदिर के तत्कालीन अध्यक्ष स्व. श्रीमान मिलापजी
दूगड़ फीरोज गाँधी सादगी पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

जो व्यक्ति समस्त कामनाओं को छोड़कर, इच्छाओं का आकर्षण छोड़कर, ममता और अहंकार से रहित होकर विचरता है वह परम् शान्ति को प्राप्त करता है ।।71।।

हे अर्जुन बह्म को प्राप्त कर लेने वालों की यह स्थिति होती है। वह फिर मोहित नहीं होता। अन्त काल में भी जो इस स्थिति में आ जाता है उसे मुक्ति मिल जाती है ।।72।।

सर्वहितकारी प्रार्थना का भावार्थ

जिनकी कृपा अमर बनाने वाली है, सर्वशक्तिमान है, पतित (पापी) को पवित्र करने वाली है और वह बिना किसी हेतु के (स्वार्थ के) मिलती है उन से सम्बन्ध स्थापित करने के लिये उन्हें "मेरे" स्वीकार किया गया है। मेरे स्वीकार करते ही आत्मीयता और प्रियता की सघन अभिव्यक्ति हो जाती है। उनकी सुरक्षा का आश्वासन जागृत करने के लिये उन्हें नाथ कहा गया है। उन सर्व समर्थ से यह प्रार्थना की गयी है कि आप दुखी प्राणियों को उस अभाव के आकर्षण का त्याग करने का बल दें जिस कामना की अपूर्ति से वो दुखी है, और सुखी प्राणियों को सेवा के द्वारा अपने सुख को बाँटने की शक्ति दें जिससे वे दोनों प्रकार के प्राणी सुख की स्पृहा और दुख के भय के बन्धन से छूट जावें और आपके पवित्र प्रेम का आस्वादन कर कृत्कृत्य हो जावें।

स्थापित 2 अक्टूबर, 1950

जैन मंत्र

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं।

णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्व साहूणं।

बौद्ध मंत्र

नम्यो हो रेंगे क्यो। नम्यो हो रेंगे क्यों।

नम्यो हो रेंगे क्यों।

सिक्ख प्रार्थना

एक ओंकार, सतनाम, कर्तापुरख, निर्भौ, निर्वैर,

अकाल मूरत, अजूनि सैभं, गुर प्रसाद जप।

आदि सच, जुगादी सच, है वी सच, नानक, होसी वी सच।

खिस्तानी प्रार्थना

Teach me, O Lord, the way of Thy statutes, and I Shall

Keep It unto the end Give me understanding and I shall

keep thy law; yea, I shall observe it with my whole heart.

जैन मंत्र का भावार्थ

अरिहंत भगवान् को नमस्कार है। सिद्ध भगवान् को नमस्कार है।

आचार्य श्री को नमस्कार है। उपाध्याय महाराज को नमस्कार है।

जगत के समस्त साधुओं को नमस्कार है।

बौद्ध मंत्र भावार्थ

सब बुद्धों को नमस्कार (बारम्बार नमस्कार)।

सिक्ख प्रार्थना भावार्थ

एक ओंकार का नाम ही सत् है। वही (सर्वशक्तिमान) कर्त्ता पुरुष है, निर्भय है, वैर विरोध से रहित है साथ ही अविनाशी और निराकार है। गुरु के प्रसाद रूप में तू उसका जाप कर। गुरू नानक जी के कथनानुसार वही अनादिकाल से जगत में सत्य था, सत्य है और सदा सत्य रहेगा।

खिस्तानी प्रार्थना भावार्थ

हे प्रभो, मुझे अपने अधिनियमों की शिक्षा दें, जिससे मैं मृत्यु पर्यंत उनका पालन कर सकूं। मुझे बोध और समझ दो जिससे मैं पूरी निष्ठा से उन का पालन कर सकूं।

इस्लामी प्रार्थना

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम।

कुल हुवल्लाहु अहद। अल्लाहुस्समद्।

लम यालिद वलम यूलद, वलम यकुल्लहु कुफवन अहद।

आमीन।

विश्वरूप-वन्दन

हरि ॐ तत्सत् श्री नारायण तू पुरूषोत्तम गुरु, तू,

सिद्ध, बुद्ध तू, स्कन्द, विनायक, सविता पावक तू।

ब्रह्म, मज्द तू, यह्व, शक्ति तू, ईशु-पिता प्रभु तू,

रूद्र, विष्णु तू, राम, कृष्ण तू, रहीम, ताओ तू।

वासुदेव, गो, विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू,

अद्वितीय तू, अकाल, निर्भय, आत्मलिंग शिव तू।

स्थापित: 2 अक्टूबर, 1950

महात्मा गांधीजी के ग्यारह नियम

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य असंग्रह,

शरीर - श्रम, अस्वाद, सर्वत्र भयवर्जन,

सर्वधर्म समानत्व, स्वदेशी स्पर्शभावना,

विनम्र व्रत निष्ठा से, ये एकादश सेव्य हैं।

इस्लामी प्रार्थना भावार्थ

मै ऐसे अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो मेहरबान और क्षमा करने वाला है। (हाँ) कह दीजिए मोहम्मद! कि अल्लाह एक और निराकार है। न उसके माता पिता है, न उसके कोई सन्तान है और न उसका कोई साझी है।

विश्वरूप-वन्दन भावार्थ

परम् आदरणीय आचार्य सन्त श्री विनोबा भावे द्वारा रचित सर्व धर्म सद्भाव द्योतक पद "विश्व रूप वन्दन" है जिसमें भगवान के विभिन्न मान्यताओं में बताए गये नामों में एक ही प्रभु है यह कहा गया है।

महात्मा गांधीजी के ग्यारह नियम के भावार्थ

हिंसा न करना, सत्य पर आस्था और आचरण, चोरी न करना, ब्रह्ममय संयमित जीवन, व्यर्थ संग्रह न करना, श्रममय जीवन होना, स्वाद और राग का त्याग, निर्भयता, सभी धर्मों और मान्यताओं को उचित आदर देना, अछूत प्रथा को बिलकुल नकार देना। व्रत के समान निष्ठा से इन ग्यारह नियमों का पालन करना चाहिए।

संस्था की दैनिक प्रार्थना

(संस्थापक महोदय द्वारा रचित)

उतरो ! तम-पथ पर, ज्योति-चरण ! उतरो ! उतरो ! उतरो !
पद-चिन्ह बने नखतावलियाँ, झूमे दिशि-दिशि दीपावलियाँ,
जन-शुभ युग-मंगल किरणों की, छवि माँग रहा तुमसे कण-कण।
अवनी-अम्बर के अधर मिले, मानव-संसृति के सुमन खिले,
जन-मानस की लहरी करले, पावन ज्योत्स्ना का पुण्य वरण।
तुम छिपे यहीं यमुना-तट पर, मोहन भरते मुरली का स्वर,
दो नवल-रश्मि जग को जिससे, अणु-अणु आलोकित हो क्षण-क्षण।

कीर्तन

हरिः शरणम्, हरिः शरणम्, हरिः शरणम्, हरिः शरणम्।।

(भावार्थः- हम सभी दुर्गुणों, बुराइयों और पापों आदि का नाश करने वाले की शरण में जावें।)

हे समर्थ ! हे करूणा-सागर ! विनती यह स्वीकार करो।।
भूल दिखाकर, उसे मिटाकर, अपना प्रेम प्रदान करो।।
पीर हरो हरि, पीर हरो हरि, पीर हरो प्रभु पीर हरो।।

(**भावार्थः**- जिसमें हमारी प्रार्थना पूरी करने का सामर्थ्य नहीं है या जिसमें दया नहीं है कि वो हमारी प्रार्थना पूरी करे, उससे ऐसी प्रार्थना करना बेकार है अतः हम समर्थ और करूणा सागर से प्रार्थना करते है कि वो हमारी गलतियों को हमें बतावे, मिटाये और अपना प्रेम प्रदान कर हमारे कष्ट दूर करें।)

रामधुन

रघुपति राघव राजाराम, पतित-पावन सीताराम।
शान्ति-विधायक राजाराम, सब सुखदायक राजाराम।।
ईश्वर-अल्लाह तेरे नाम, मन्दिर-मस्जिद तेरे धाम।
मानव सब हैं एक समान, सबको सन्मति दे भगवान।।
"गाँधी विद्या मन्दिर" धाम, कण-कण में गूँजे हरि नाम।
अब मत देर करो भगवान, आओ सफल करो शुभकाम।।

समापन प्रार्थना

मेरे नाथ!
आप अपनी सुधामयी, सर्वसमर्थ, पतित-पावनी,
अहैतुकी कृपा से मानव मात्र को विवेक का आदर
तथा बल का सदुपयोग करने की सामर्थ्य प्रदान करें
एवं हे करूणा सागर!
अपनी अपार करूणा से शीघ्र ही राग-द्वेष का नाश करें
सभी का जीवन सेवा, त्याग प्रेम से परिपूर्ण हो जाय।
ॐ, ॐ, ॐ, शान्तिः, शान्तिः, शान्तिः

महिला विद्यापीठ मीरा निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय

साधना की राह

मैं नहीं, मेरा नहीं, यह तन किसी का है दिया।

जो भी अपने पास है, वह धन किसी का है दिया।।

देने वाले ने दिया, वो भी दिया किस शान से,

'मेरा है' यह लेनेवाला, कह उठा अभिमान से।

'मैं, मेरा' यह कहने वाला, मन किसी का है दिया।।

जो मिला है वो हमेशा पास रह सकता नहीं,

कब बिछुड़ जाए ये कोई, राज कह सकता नहीं।

जिन्दगानी का खिला मधुवन किसी का है दिया ।।

जग की सेवा, खोज अपनी, प्रीति उनसे कीजिए,

जिन्दगी का राज है यह, जान कर जी लीजिए।

साधना की राह पर, साधन किसी का है दिया।।

इन्सान बन के जी

(स्व. श्री मिलाप दूगड़)

एक दिन ही जी, मगर इन्सान बन के जी
प्रीत के संगीत की इक तान बन के जी। एक दिन ही ...
आपदा आए भले पर छोड़ मत संकल्प अपने,
तम सघन छाये भले पर तोड़ मत सुकुमार सपने
तीर्थ नव-निर्माण कर जा, छोड़ जा पदचिन्ह अपने
एक दिन ही जी, जगत की शान बन के जी। एक दिन ही ...
एक नन्ही नाव उसके ही सहारे पार जाना
घोर हो तूफान फिर भी बाँध हिम्मत, जूझ जाना
कष्ट सह लेना स्वयं पर, विश्व का कल्याण करना
एक दिन ही जी, सफल अभियान बन के जी। एक दिन ही ...
देखता मुड़-मुड़ भला क्यों रूँद चुके उन कंटको को
दे रहा तू क्यों महत्ता मार्गव्यापी झंझटों को
आत्मबल संचार करले, विजित करले, संकटो को
एक दिन ही जी, सुपथ संधान बन के जी। एक दिन ही ...
चमक उठना तड़ित ज्यों, जब काल सी छाएँ घटाएँ
तू अडिग चट्टान बनना, आँधियाँ जब गजब ढाएँ
बरस पड़ना मेह बन जब विकट दावानल दहाएँ
एक दिन ही जी, अमर आख्यान बन के जी। एक दिन ही ...
लक्ष्य-पथ को जगमगाने, दीप निष्ठा का जला ले
दुःख जन-जन के हरण की, तू अटल सौगन्ध खा ले
और उनके हृदयतल की, तू अतुल आशीष पा ले
एक दिन ही जी, सुखद वरदान बन के जी। एक दिन ही ...

गाँधीजी का प्रिय भजन

(श्री युत नरसी मेहता)

वैष्णव - जन तो तेने कहिये, जे पीड़ पराई जाणे रे,
पर दूखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आवे रे।
सकल लोकमाँ सहुने वंदे निन्दा करे न केनी रे,
वाच, काछ, मन निश्चल राखे, धन-धन जननी तेनी रे।
समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे,
जिह्व थकी असत्य न बोले, परधन नव झाले हाथ रे।
मोह-माया व्यापे नहीं जेने, दृढ वैराग्य जेना मनमाँ रे,
रामनामशूँ ताली लागी, सकल तिरथ तेना तनमाँ रे।
वण लोभी ने कपट रहित छे, काम क्रोध निवार्या रे,
भणै नरसैंयों तेनूँ दरसण करताँ, कुल एकोतर तार्या रे।

जीवन की माँग

हे नाथ! अब तो ऐसी दया हो, जीवन निरर्थक जाने न पाए,
यह मन न जाने क्या-क्या कराए, कुछ बन न पाया अपने बनाए।
संसार में ही आसक्त रहकर, दिन-रात अपने मतलब की कहकर,
सुख के लिए लाखों दुःख सहकर, ये दिन अभी तक यों ही बिताए।
ऐसा जगा दो फिर सो न जाऊँ, अपने को निष्काम प्रेमी बनाऊँ,
मैं आपको चाहूँ और पाऊँ, संसार का भय कुछ रह न जाए।
वह योग्यता दो सत्कर्म करलूँ, अपने हृदय में सद्भाव भरलूँ,
नरतन है साधन, भवसिंधु तर लूँ, ऐसा समय फिर आए न आए।
स्वामी! मुझे निरभिमानी बना दो, दारिद्र हरलो, दानी बना दो,
आनन्दमय विज्ञानी बना दो, मैं हूँ तुम्हारी आशा लगाए।

बाल-प्रार्थना

हे भगवान! हे भगवान! तुमसे माँगे यह वरदान।

सवा लुटाएँ मधु-मुस्कान, बोलें मीठे बोल सुजान,
बनकर बुद्धिमान-बलवान, दुखियों के आजाएँ काम।

मेहनत से हम झुकें नहीं, बाधाओं से रूकें नहीं,
अच्छे-अच्छे काम करें, कुल का ऊँचा नाम करें।

तात-मात-गुरू के प्यारे, आज्ञापालक हों सारे,
कभी न अनुशासन तोड़े, कभी न निज-संस्कृति छोड़े।

जन-जन के मन भा जाएँ, मंजिल अपनी पा जाएँ,
जिस जननी की गोद फले, (उस) माँ के लगे गले।

बाल गृह

देश - महिमा

चंदन है इस देश की माटी, तपोभूमि हर ग्राम है,
हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है।
हर शरीर मन्दिर सा पावन, हर मानव उपकारी है,
जहाँ सिंह बन गए खिलौने, गाय जहाँ माँ प्यारी है।
जहाँ सवेरा शंख बजाता, लोरी गाती शाम है।। हर बाला ....
जहाँ कर्म से भाग्य बदलते, श्रम निष्ठा कल्याणी है,
त्याग और तप की गाथाएँ गाती कवि की वाणी है।
ज्ञान जहाँ का गंगाजल सा निर्मल है, अविराम है।। हर बाला ....
जिसके सैनिक समर भूमि में गाया करते गीता है,
जहाँ खेत में हल के नीचे खेला करती सीता है।
जीवन का आदर्श जहाँ पर परमेश्वर का धाम है। हर बाला ....

President Dr. Rajendra Prasad laying foundation stone of University Building in 1955

Prime Minister Sh. Morarji Desai with the founder

Noted Gandhian Dr. Shrimannarain Agrawal, The Second Chancellor of G.V.M.

Educationist Dr. K. G. Sayedain

Smt. & Dr. Jaiprakash Narain with Seth Sohanlal Duga, The then president of G.V.M.

Dr. Karni Singh, Bikaner Presenting his self-made painting to the founder

गाँधी विद्या मन्दिर का स्वरूप

(संस्थापक, पूज्य स्वामी श्री श्रीरामशरणजी महाराज के शब्दों में)

"गाँधी विद्या मन्दिर" अर्थात प्रत्येक मानव को मानवता का बोध कराने वाला वृहद् शिक्षण प्रतिष्ठान।

विस्तार से बताऊँ तो "गाँधी विद्या" से तात्पर्य है वह जीवनशैली जो सर्वोपयोगी, सर्वहितकारी, विचारों, परिस्थितियों एवं योग्यताओं की विभिन्नताओं के होते हुए भी प्रीति की एकता में मानव समाज को आबद्ध रख सके एवं जो विभिन्न ज्ञानधाराओं का सम्यक सर्वोच्च शिक्षण देते हुए मानव समाज को बिखरने से बचाएः इसी में है ग्राम-सुधार, चरित्र-निर्माण, नशा-मुक्ति, निर्दोषता, जन-जन की सेवा, स्वास्थ्य संरक्षण, किसी का बुरा न करना-न सोचना, बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति में हाथ बँटाना आदि-आदि।

इसे मैंने 'गाँधी विद्या' नाम से सम्बोधित किया तथा उसका वृहद्धाम ही उसका 'मन्दिर' है।

गाँधी विद्या मन्दिर
सरदारशहर, जिला - चुरू (राज.)
फोन नं. - 01564-220025/
223642/223054
फेक्स नं. - 01564-223682
ई मेल-gvmcentraloffice@gmail.com
वेबसाईट-www.gandhividyamandir.org.in

उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान
(मानित विश्वविद्यालय),
गाँधी विद्या मन्दिर,
सरदारशहर, जिला - चुरू (राज.)
फोन नं. - 01564-220025/
223642

साप्ताहिक प्रार्थना- **10,000** प्रतियां
षष्ठमावृत्ति मई, **2018**

मूल्य रु. **20/-**